इटली का एकीकरण

[ITALIAN UNIFICATION]

इटली के एकीकरण की पृष्ठभूमि *(Background of the Italian Unification)*

19वीं शताब्दी में इटली मात्र एक भौगोलिक अभिव्यक्ति था; क्योंकि इसमें अनेक राज्य थे जिनके शासकों का आपसी हित एक-दूसरे के विपरीत थे । ये शासक इटली की राजनीतिक एकता के विरुद्ध थे; क्योंकि एकता की हालत में अनेक शासकों को अपनी गद्दी से हाथ धोना पड़ता । फिर भी, 19वीं सदी में ही कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं, जिनके कारण इटली में राष्ट्रवाद का उदय हुआ और बहुत-सी क्रांतिकारी संस्थाओं का जन्म हुआ जिन्होंने इटली के एकीकरण में हाथ बँटाया और अंततः इटली 1870 ई० में एक राष्ट्र के रूप में उदित हुआ ।

एकीकरण के सहायक तत्त्व—इटली में अनेक राज्य थे और इनके शासकों का आपसी हित एक-दूसरे से टकराता था, फिर भी इटली में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ मौजूद थीं जिनके कारण इटली में एकीकरण की भावना मुखर होती गई । इटली में एक ही नस्ल के लोग थे और उनकी भाषा भी एक ही इतालवी थी । इसके अलावा उनका धर्म भी रोमन कैथोलिक था । उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण उनका सांस्कृतिक जीवन एक समान था । इटली के निवासी अनेक राज्यों में रहते हुए भी एकता महसूस करते थे और राष्ट्रीयता की बढ़ती लहर में राजनीतिक एकता प्राप्त कर वे एक बलशाली राष्ट्र के रूप में यूरोप में इटली को पेश करना चाहते थे ।

इसके अलावा फ्रांस की सेना जब इटली में घुसी तो उसने क्रांतिकारी नारों—'समानता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व'—का सहारा लिया । पददलित इटलीवासी इन नारों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने अपनी सहानुभूति क्रांतिकारी सेना के साथ दिखाई । लेकिन, इटलीवालों का भ्रम शीघ्र ही टूट गया, जब उनपर विदेशी शासक नेपोलियन का शासन शुरू हुआ । शासन की सुविधा के लिए नेपोलियन ने इटली के बहुसंख्यक राज्यों की संख्या घटा दी और इस तरह इटली के एकीकरण के लिए भौगोलिक पृष्ठभूमि तैयार की । इसके अलावा उसने शासन की सुविधा के लिए एक ही तरह का कानून पूरे इटली पर लागू किए, जो फ्रांसीसी क्रांति की उपज थे । ये कानून निश्चित रूप से इटली के कानूनों से उदार थे । नेपोलियन के इस कार्य ने भी इटली को प्रशासनिक एकता प्रदान की । लेकिन, नेपोलियन की इटली के एकीकरण के प्रति सबसे महत्त्वपूर्ण देन राष्ट्रवादी भावनाओं को उभारना था । नेपोलियन के शासन का इटली में विरोध होने लगा और इस प्रतिरोध में इटलीवासियों ने एक साथ मिलकर फ्रांसीसी सेना का सामना किया । इसके परिणामस्वरूप उनमें भावनात्मक एकता का संचार हुआ ।

1815 ई० के वियना कॉंग्रेस ने इटली को पुनः विभाजित कर दिया और उस पर ऑस्ट्रिया का आधिपत्य स्थापित कर दिया । फिर भी, इटली के राज्यों की संख्या उतनी

नहीं थी, जितनी कि फ्रांसीसी क्रांति के पूर्व थी। इटलीवासी 1815 ई० की वियना-व्यवस्था का विरोध करते थे। इस विरोध के फलस्वरूप कई संस्थाओं का जन्म हुआ—कार्बोनरी, युवा इटली—जिन्होंने इटली के एकीकरण के लिए प्रयास किया।

इटलीवासी एकीकरण के लिए आर्थिक समृद्धि आवश्यक समझते थे। उनके विचार में राजनीतिक एकीकरण के पहले देश का आर्थिक एकीकरण आवश्यक था। इटली के व्यवसाय, कृषि और उद्योग पिछड़े हुए थे। इनकी तरक्की के लिए कई सफल प्रयास किए गए और तदनुसार सार्डिनिया में नए कानून बनाए गए।

इटली के एकीकरण के लिए प्रमुख विचारधाराएँ—इटली के एकीकरण के लिए तीन तरह की विचारधाराओं का उदय हुआ—

1. **गणतंत्रवादी सिद्धांत**—मेजिनी इटली का एक देशभक्त था। वह इटली की राष्ट्रीय एकता हेतु गणतंत्र स्थापित कर करना चाहता था।

2. **जीयोबर्टी (Gioberti) का संघीय राज्य का सिद्धांत**—जीयोबर्टी पोप के अंतरराष्ट्रीय रूप से फायदा उठाकर उसी अधीन इटली के सभी राज्यों के संघ का समर्थक था।

3. **सांविधानिक राजतंत्र के सिद्धांत**—कावूर सांविधानिक राजतंत्र में विश्वास करता था और उसका विश्वास था कि इटली का एकीकरण पीडमौंट-सार्डिनिया के नेतृत्व में युद्ध द्वारा संभव है। फिर भी वह निरंकुश राजतंत्र का आलोचक था और आम जनता की सहमति से सांविधानिक राजतंत्र का समर्थक था। वास्तव में उसका विचार तत्कालीन परिस्थिति में व्यवहारकुशल था; क्योंकि उसका प्रमुख मकसद इटली का एकीकरण था।

इटली के एकीकरण में बाधाएँ—इटली के एकीकरण का मार्ग अनेक बाधाओं से भरा हुआ था। वास्तव में इटली के प्रबुद्ध तथा व्यापारी वर्ग के लोग राष्ट्रीय एकता के लिए बेताब थे; क्योंकि उन्हें इससे लाभ की आशा थी। लेकिन, देश की अधिकांश जनता अशिक्षित और गरीब थी, जिसको राष्ट्रीय एकता से कुछ लेना-देना नहीं था। ऐसी हालत में बिना आम जनता की सहायता के कोई आंदोलन सफलतापूर्वक चलाना संभव नहीं था। इसके अतिरिक्त तत्कालीन इटली में अनेक छोटे-छोटे राजा राज्य कर रहे थे। इन राजाओं को भय था कि किसी तरह की उदारवादी राष्ट्रीय एकता के लिए चलाए गए आंदोलन में उनके निरंकुश राजतंत्र की समाप्ति के साथ ही उनकी अपनी राजगद्दी भी नहीं रहेगी; क्योंकि एकीकृत इटली का एक ही राजा हो सकता था।

इटली के एकीकरण में ऑस्ट्रिया सबसे बड़ा बाधा उपस्थित कर रहा था। वास्तव में ऑस्ट्रिया के अधीन इटली के दो प्रांत—लोम्बार्डी और वेनेशिया थे, फलतः इटली में उसका प्रत्यक्ष और सीधा स्वार्थ था और इसके चलते वह इटली में चल रहे किसी आंदोलन को दबाने के लिए अपने को नैतिक रूप से जिम्मेवार मानता था। इतना ही नहीं, यूरोपीय व्यवस्था के अनुसार ऑस्ट्रिया का चांसलर मेटरनिख यूरोप का पुलिस था और इस हैसियत से वह किसी भी यूरोपीय देश में उदारवादी एवं राष्ट्रवादी आंदोलन को कुचलना अपना पवित्र कर्तव्य समझता था। कमजोर एवं विभाजित इटली ऑस्ट्रिया के शक्तिशाली हस्तक्षेप को अपने क्षेत्र से अलग रखने में सक्षम नहीं था।

इटली के एकीकरण में पोप भी अड़ंगा डालता था। वास्तव में पोप को भय था कि इटली के एकीकरण की अवस्था में उसका अन्य छोटे-छोटे राज्यों में हस्तक्षेप का अधिकार समाप्त हो जाएगा। इसके अलावा राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत एकीकृत इटली पोप के धार्मिक अधिकार को चुनौती दे सकता था।

इटली के एकीकरण में विदेशी शक्तियाँ भी बहुत चाव नहीं ले रही थीं। उदारवादी देश; यथा—फ्रांस और इंगलैंड—इटली की ऑस्ट्रिया से स्वतंत्रता चाहते थे, लेकिन इटली के एकीकरण के प्रति उनमें कोई खास उत्साह नहीं था। ईसाई जगत का प्रमुख पोप इटली में ही रहता था, अतः यूरोप का प्रत्येक देश मध्य युग से ही किसी-न-किसी रूप में इटली में अपना प्रभाव कायम रखना चाहता था और यह इटली के राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने के बाद संभव नहीं था।

आंतरिक बाधाओं में राजतंत्र का विरोध तो था ही, साथ ही उस कुलीनवर्ग का भी विरोध था जो अपने-आपको चर्च, धर्मसंघ और शक्ति का रक्षक मानता था और इन सबका संरक्षक ऑस्ट्रिया था। राजनीतिक विषमताएँ आर्थिक कारणों से और भी उग्र हो गईं; क्योंकि दक्षिणी इटली अविकसित और ग्रामीण था तथा उत्तरी इटली अर्द्ध-औद्योगिक।

इटली के एकीकरण के मार्ग में सामंतवर्ग और कुलीनवर्ग भी बाधक थ, जो सामंतवादी तथा जागीरदारी प्रथा को और मजबूत करके अपना प्रभाव बढ़ाना चाहते थे। उनकी शक्ति उनकी जागीरें तथा राजनीतिक प्रभुता थी। इटली में औद्योगिक क्रांति भी अपने चरण नहीं रख पाई थी। ऐसी हालत में जमीन के मालिकों, अर्थात सामंतों की समाज में पूछ थी और ये सामंत राष्ट्रीय एकता के पक्ष में नहीं थे; क्योंकि इन्हें भय था कि राष्ट्रीय एकता हासिल करने पर इटली में उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति पहलेवाली नहीं रह जाएगी।

इटली के एकीकरण का क्रमिक विकास *(Gradual Development of Italian Unification)*

नेपोलियन की इटली विजय और फ्रांस की क्रांतिजनित शक्तियों ने इटली के एकीकरण के मार्ग को प्रशस्त किया। नेपोलियन की पराजय के पश्चात यूरोप में प्रतिक्रिया का राज्य व्याप्त हो गया और इटली को पुनः विभाजित कर दिया गया, जहाँ ऑस्ट्रिया का बोलबाला कायम हुआ। फिर भी इटली के देशभक्त राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास करते रहे। कुछ राष्ट्रभक्तों ने 'कार्बोनरी' नामक एक गुप्त संस्था की स्थापना की, जो नेपल्स के अलावा देश के अन्य भागों में फैल गई। इस संस्था ने गुप्त रूप से कई विद्रोहों का आयोजन किया और क्रांतिकारी भावना का प्रचार आरंभ किया। 1820 ई० के नेपल्स के विद्रोह में कार्बोनरी का हाथ था, फलतः मेटरनिख ने इसके सदस्यों को कुचलने का हर संभव प्रयास किया।

1830 ई० की फ्रांसीसी क्रांति के परिणामस्वरूप इटली में भी क्रांति हुई। पोप की रियासतों तथा पर्मा और मोडेना में भी विद्रोह हुए। विद्रोहियों को लुई फिलिप से सहायता की आशा थी, लेकिन उनकी यह आशा पूरी नहीं हुई और अंत में मेटरनिख ने एक बार फिर विद्रोहियों का दमन किया।

मेजिनी और 'युवा इटली' की स्थापना—1815 से 1831 ई० तक इटली के एकीकरण के लिए किए गए सारे प्रयत्न विफल हो चुके थे और घोर निराशा का वातावरण छा गया था। ऐसी ही निराशाजनक परिस्थिति में इटली में राष्ट्रीय आंदोलन के नेता मेजिनी (Giuseppe Mazzini) का प्रादुर्भाव हुआ। उसके दिमाग में संयुक्त इटली का स्वरूप जितना स्पष्ट और निश्चित था उतना किसी अन्य व्यक्ति के दिमाग में नहीं था। उसने इटली की दुर्दशा का वर्णन इन शब्दों में किया है, "हमारे पास न राष्ट्रीय झंडा है, न राजनीतिक नाम है और न यूरोपीय राष्ट्रों में हमारी कोई प्रतिष्ठा है। किसी भी रियासत में प्रेस की आजादी नहीं है, न कोई सभा कर सकता है और न भाषण की स्वतंत्रता है। सब लोग

मिलकर कोई प्रार्थनापत्र नहीं दे सकते । विदेशों से पुस्तकें नहीं मँगाई जा सकतीं । शिक्षा के विषय में कोई स्वतंत्रता नहीं है ।'' मेजिनी का काम था लोगों को शिक्षा देकर यह अनुभव कराना कि कृत्रिम राजनीतिक सीमाओं के बावजूद इटली में सजीव एकता है । उनकी परंपराएँ एवं ऐतिहासिक स्मृतियाँ एक हैं । वे एक राष्ट्र के नागंरिक हैं और एक ही भाषा बोलते हैं । मेजिनी ने 1830 ई० की क्रांति में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी—कार्बोनरी संस्था का सदस्य होने के कारण उसे गिरफ्तार कर लिया गया था ।

कारागार में मेजिनी को अनुभव हुआ कि इटली का एकीकरण कार्बोनरी की योजना के अनुसार नहीं हो सकता । 1831 ई० में उसने 'युवा इटली' (Young Italy) नामक संस्था की स्थापना की, जिसने नवीन इटली के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । 'युवाशक्ति' में मेजिनी का अटूट विश्वास था । वह कहा करता था, ''यदि समाज में क्रांति लानी है तो विद्रोह का नेतृत्व युवकों के हाथ में दे दो। युवकों के हृदय में असीम शक्ति छिपी हुई है । जनसाधारण पर उनकी आवाज का जादू के समान असर होता है ।'' 'युवा इटली' संस्था का मुख्य उद्देश्य था—इटली की एकता एवं स्वतंत्रता की प्राप्ति तथा स्वतंत्रता, समानता और जनकल्याण के सिद्धांत पर आधृत राज्य की स्थापना । मेजिनी के विचार का प्रभाव इतना व्यापक हुआ कि दो वर्षों के भीतर ही 'युवा इटली' के सदस्यों की संख्या साठ हजार तक पहुँच गई । इस प्रकार, मेजिनी के प्रयासों के परिणामस्वरूप इटली के निवासियों का राजनीतिक क्षितिज और विस्तृत हो गया एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए वहाँ एक शक्तिशाली जनमत तैयार हो गया ।

मेजिनी के जीवन का एक ही धर्म था—इटली का एकीकरण । वह कहा करता था कि यह धर्म मनुष्य की उच्चतम भावनाओं को स्पंदित करता है, इसके लिए पूर्ण आत्मोत्सर्ग और तल्लीनता की आवश्यकता है । उसने युवकों को कहना प्रारंभ किया, ''तुम देश-देश और गाँव-गाँव में स्वतंत्रता की मशाल लेकर जाओ, जनता को स्वतंत्रता के लाभ समझाओ और उसे एक धर्म के रूप में प्रतिष्ठित करो, जिससे लोग उसकी पूजा करने लगें । उनके हृदय में इतना साहस और सहन-शक्ति भर दो कि स्वतंत्रता देवी की आराधना के लिए उन्हें जो यातनाएँ और कारागार के कष्ट भोगने पड़ें, उनसे वे नहीं घबड़ाएँ।'' इस संस्था के माध्यम से उसने यह समझाना प्रारंभ किया कि इटली भी एक देश है, यह भौगोलिक अभिव्यक्ति मात्र नहीं है ।

मेजिनी इटली का जननेता बन गया था । अनगिनत लोगों ने उत्साह के साथ उसके कार्यों एवं विचारों का अनुमोदन किया । उसकी संस्था 'युवा इटली' में सैकड़ों युवक भरती होने लगे । इटली के अनेक राज्यों में इस संस्था की अनेक शाखाएँ खोली गईं । दो वर्षों के अंतर्गत लगभग 60,000 युवक इसके सदस्य बन गए । 1848 ई० की क्रांति के समय मेजिनी इटली में गणतंत्र की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हुआ, लेकिन वह सफल नहीं हो सका । फिर भी उसका यह प्रयत्न बाद के समय के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा ।

'युवा इटली' का एकमात्र उद्देश्य इटली को ऑस्ट्रिया के प्रभाव से मुक्त कर उसका एकीकरण करना था । मेजिनी कट्टर गणतंत्रवादी था और चाहता था कि एकीकरण का कार्य पूरा होने पर देश में गणतंत्रीय सरकार कायम हो । इटली के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए मेजिनी राष्ट्रीय मुक्ति का प्रतीक बना ।

1848 ई० की फ्रांसीसी क्रांति और इटली—1848 ई० की फ्रांसीसी क्रांति का प्रभाव संपूर्ण यूरोप पर पड़ा । इस क्रांति के परिणामस्वरूप ऑस्ट्रिया में भी क्रांति हुई और मेटरनिख को अपना देश छोड़कर भागना पड़ा । मेटरनिख के पलायन से इटलीवासी खुश हुए और

इटली में ऑस्ट्रिया के विरुद्ध विद्रोह हो गया। पीडमौंट-सार्डिनिया के राजा चार्ल्स अल्बर्ट ने ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और इटली के सारे देशभक्तों ने सार्डिनिया की तरफ से ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया। लेकिन, ऑस्ट्रिया की सेना ने इस विद्रोह को शीघ्र ही दबा दिया। चार्ल्स अल्बर्ट ने हताश होकर गद्दी अपने पुत्र विक्टर इमैनुएल द्वितीय को सौंप दी। फिर भी, चार्ल्स अल्बर्ट का यह युद्ध व्यर्थ नहीं गया। पूरे इटली के लोगों को यह विश्वास हो गया कि बिना ऑस्ट्रिया को पराजित किए हुए इटली का एकीकरण नहीं हो सकता और पूरे इटली के राज्यों में सार्डिनिया-पीडमौंट ही ऑस्ट्रिया का मुकाबला कर सकता है। इसके लिए सैनिक तैयारी और जन-सहयोग भी आवश्यक समझा जाने लगा। ऑस्ट्रिया से मुकाबला करने के लिए अकेला सार्डिनिया सक्षम नहीं था, अतः यह भी महसूस किया गया विदेशी सहायता प्राप्त कर ही इटली का एकीकरण हो सकता है।

कावूर और इटली का एकीकरण *(Cavour and Unification of Italy)*

काउंट कावूर **(Count Camillo Benso Cavour)** पीडमौंट का निवासी था और पेशे से इंजीनियर था। आरंभ में वह सेना में भरती हुआ, लेकिन शीघ्र ही अपने उदार विचार के कारण उसे सेना की नौकरी छोड़नी पड़ी। वह वैध राजतंत्र में विश्वास करता था। कुछ दिनों के बाद वह पीडमौंट के प्रथम संसद के चुनाव में खड़ा हुआ और विजयी हुआ। 1850 ई० में वह मंत्रिमंडल में शामिल हुआ और 1852 ई० में प्रधानमंत्री बना। प्रधानमंत्री बनते ही उसने अपने राज्य की शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न किया और एक महान राजनीतिज्ञ तथा अद्वितीय राजनयिक का परिचय दिया। राजा विक्टर इमैनुएल की कृपा भी उसे प्राप्त थी। अतः, पीडमौंट-सार्डिनिया में कावूर ने संसदीय शासन-प्रणाली का विकास किया और स्वायत्त संस्थाओं का निर्माण कर जनता को स्थानीय संस्था से अवगत कराया। उसने चर्च के विशेषाधिकारों को भी समाप्त किया और मठों को नष्ट कर धार्मिक भ्रष्टाचार दूर करने का प्रयास किया। शिक्षा की उन्नति के लिए उसने शिक्षण संस्थाओं की भी स्थापना की।

राज्य की आर्थिक स्थिति ठीक करने के लिए कावूर ने मुक्त व्यापार को प्रोत्साहित किया। व्यापार को बढ़ावा देने के लिए उसने विदेशी राज्यों से संधियाँ कीं। वस्तुओं के मूल्य में भारी कमी कर दी गई। व्यापारिक सामग्री के उत्पादन के लिए उसने सार्डिनिया में अनेक कल-कारखाने खोले और आवागमन को आसान बनाने के लिए तत्संबंधी साधनों का निर्माण किया। रेलवे लाइनें बनाई गईं और नहरों का विस्तार किया गया। बंजर एवं दलदली भूमि को सुधार कर उसे कृषि के लायक बनाया गया। किसानों की सुख-सुविधा के लिए अनेक समितियों का गठन कर लिया गया। इस तरह पीडमौंट आधुनिक राष्ट्र की श्रेणी में आ गया।

इटली के एकीकरण का पहला चरण—इटली के एकीकरण के संबंध में कावूर के कुछ खास सिद्धांत थे। उसकी राय थी कि समस्त इटली में सार्डिनिया ही एक ऐसा राज्य था, जो इटली को नेतृत्व प्रदान कर सकता था। उसके विचार से इटली के एकीकरण के लिए ऑस्ट्रिया को इटली से निकालना जरूरी था और यह बाह्य सहायता से सेना द्वारा ही संपादित हो सकता था। ऑस्ट्रिया के विरुद्ध सार्डिनिया को केवल फ्रांस और इंगलैंड ही मदद कर सकते थे। लेकिन, इंगलैंड ने यूरोपीय राजनीति में हिस्सा लेना छोड़ दिया था। अतः, फ्रांस से ही कूटनीतिक और सैनिक सहायता की अपेक्षा की जा सकती थी। कावूर इटली के एकीकरण के लिए अंतरराष्ट्रीय सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था, जिसके लिए आवश्यक था कि इटली के प्रश्न को अंतरराष्ट्रीय बनाया जाए।

विदेशी सहायता—कावूर अपनी योग्यतानुसार इटली के एकीकरण के लिए विदेशी सहायता प्राप्त करने के लिए उद्यत हुआ। संयोगवश इसी समय 1854 ई० में रूस और तुर्की के बीच क्रीमिया का युद्ध शुरू हुआ, जिसमें इंगलैंड और फ्रांस ने तुर्की की तरफ से युद्ध में भाग लिया। जब लड़ाई शुरू हुई तो कावूर ने भी सार्डिनिया की तरफ से एक सेना भेजकर इंगलैंड और फ्रांस की मदद की। यह एक जोखिम भरा काम था; क्योंकि यह लड़ाई बहुत दिनों तक चली, जिसमें दोनों तरफ से मरनेवालों और हताहतों की संख्या काफी थी। फिर भी क्रीमिया की इस लड़ाई से फ्रांस और इंगलैंड में सार्डिनिया के प्रति सहानुभूति की भावना आई। युद्ध की समाप्ति के बाद पेरिस शांति सम्मेलन में ऑस्ट्रिया के विरोध के बावजूद फ्रांस और इंगलैंड के कारण अन्य मित्रराष्ट्रों की कतार में सार्डिनिया को भी बैठने का मौका मिला। वहाँ उसने इटली की दुरावस्था को सबके सामने उजागर करने में सफलता प्राप्त की। इटली की दुर्दशा के लिए उसने ऑस्ट्रिया को जिम्मेवार ठहराया। सारे यूरोप का ध्यान इस समस्या की ओर आकर्षित हुआ और यूरोप में सभी राज्यों की सहानुभूति इटली के प्रति हो गई। कावूर को पक्का विश्वास था कि इटली अकेले राष्ट्रीय एकता कायम नहीं कर सकता है। इसका वजह था कि लोम्बार्डी और वेनेशिया पर ऑस्ट्रिया का अधिकार था और 1856 ई० के पेरिस काँग्रेस में ऑस्ट्रिया ने स्पष्ट कर दिया था कि उसे सेना द्वारा पराजित कर ही इटली से हटाया जा सकता है। कास्टोजा और नोवोरा के युद्धों ने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि अकेले पीडमौंट के लिए ऑस्ट्रिया को पराजित करना संभव नहीं था, इसलिए पीडमौंट को यूरोप में इटली की राजनीतिक एकता के लिए विदेशी मित्रों की खोज थी। यह तय था कि कावूर इंगलैंड से मदद लेना ज्यादा पसंद करता; क्योंकि इंगलैंड उदारवाद एवं राष्ट्रवाद का समर्थक समझा जाता था और वह इटली से किसी चीज की अपेक्षा भी नहीं करता था। लेकिन, दुर्भाग्यवश कई बार ब्रिटिश सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वह इटली के एकीकरण के लिए सैनिक सहायता नहीं प्रदान करेगी। वास्तव में पामर्स्टन की विदेश-नीति का स्वयंसिद्ध सिद्धांत कि फ्रांस और रूस के शक्ति संतुलन को बरकरार रखने के लिए ऑस्ट्रिया साम्राज्य का जीवित रहना आवश्यक है, अब भी ब्रिटिश सरकार को मान्य था। जब 1857 ई० में आर्कड्यूक मैक्सिमिलियन लोम्बार्डी का वायसराय नियुक्त हुआ और उसने मेलभाव और समझौतावाद की नीति अपनाई तो इससे ब्रिटिश सरकार संतुष्ट हो गई। ऐसी स्थिति में कावूर इंगलैंड से युद्ध की हालत में तटस्थता की ही अधिक-से-अधिक आशा कर सकता था।

ऐसी हालत में फ्रांस ही एकमात्र ऐसा देश था जिसपर कावूर आशा-भरी निगाह से देख सकता था। वास्तव में नेपोलियन तृतीय इटली के कार्बोनरी संगठन का अपने प्रवास के दिनों में सदस्य रह चुका था, अतः उससे कुछ आशा करना कावूर के लिए तर्कसंगत था। इसके अलावा उसे प्रादेशिक प्रलोभन देकर भी मदद के लिए तैयार किया जा सकता था। नेपोलियन तृतीय विदेशों में प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए भी लालायित था और इटली के एकीकरण आंदोलन में शरीक होकर अपने देशवासियों के उदार एवं प्रसारवादी वर्ग के लोगों का समर्थन पा सकता था। नेपोलियन ने क्रीमिया के युद्ध से सीखा था कि विजय के बाद विजयी देश की प्रतिष्ठा बढ़ती है। इसके अलावा वह मूलतः षड्यंत्रकारी प्रवृत्ति का था और ऑस्ट्रिया के विरुद्ध षड्यंत्र करना उसे अच्छा लगता था। यदि नेपोलियन तृतीय पीडमौंट-सार्डिनिया को सैनिक मदद देकर अनुगृहित करता तो निश्चित रूप से फ्रांस की सीमा पर उत्तरी इटली का यह राज्य उसके प्रति वफादार होता जो बाद में लाभप्रद हो सकता था। 1815 ई० की वियना की अपमानजनक स्थिति को भुलाने के लिए नीस और सेवाय लेना भी उसे फायदेमंद लगता था। अनजाने में इटली के एकीकरण की प्रक्रिया शुरुआत नेपोलियन प्रथम ने शुरू की थी, जिसको नेपोलियन तृतीय पूरा कर खुश होने

का दंभ भर रहा था। 1856 ई० के चुनाव में फ्रांसीसी जनता ने एक कमजोर विपक्ष को संसद में भेजा जिससे नेपोलियन का आत्मविश्वास और बढ़ा और वह प्रसारवादी नीति को अख्तियार करने के लिए उद्यत हुआ। इसी बीच ओरसिनी नामक इटली के एक देशभक्त ने ओपेरा जाते समय नेपोलियन तृतीय पर प्राणलेवा हमला किया और जब उसपर मुकदमा चला तो उसने नेपोलियन को इटली के एकीकरण में मदद नहीं करने के कारण अपने हमले को जायज बताया। नेपोलियन तृतीय ओरसिनी द्वारा अपनी (नेपोलियन की) हत्या के प्रयास से प्रभावित हुआ और इटली के एकीकरण के लिए पीडमौंट-सार्डिनिया को मदद करने के लिए तैयार हो गया।

प्लोंबियर्स का समझौता—नेपोलियन तृतीय इटली की मदद के लिए उन्मुख हुआ, लेकिन उसका ध्येय एक संगठित मजबूत इटली नहीं होकर ऑस्ट्रिया के प्रभाव से मुक्त इटली था। इस बात को ध्यान में रखकर उसने इटली के प्रधानमंत्री से प्लोंबियर्स (Plombieres) नामक जगह पर 1858 ई० में भेंट की और उसके साथ समझौता किया। इस समझौते के अनुसार यह तय हुआ कि

(1) पीडमौंट के राजा विक्टर इमैनुएल की पुत्री राजकुमारी क्लोटाइल्ड (Clothilde) नेपोलियन तृतीय के चचेरे भाई जेरम (Jerome) से शादी करेगी और इस तरह के वैवाहिक संबंध से पीडमौंट और नेपोलियन तृतीय के संबंध प्रगाढ़ होंगे; (2) फ्रांस पीडमौंट को 2 लाख सेना से ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध में मदद करेगा; (3) युद्ध के बाद समझौता होते समय लोम्बार्डी और वेनेशिया ऑस्ट्रिया से लेकर पीडमौंट को दिया जाएगा और इस तरह ऊपरी इटली का राज्य बनेगा और (4) इसके बदले में पीडमौंट फ्रांस को नीस और सेवाय देगा। यह 20वीं शताब्दी की एक घृणित सौदेबाजी थी जिसमें ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध के लिए उपयुक्त कारण ढूँढ़ना था। कावूर इटली के एकीकरण के पक्ष में था, न कि केवल ऑस्ट्रिया से मुक्ति पाकर संतुष्ट होनेवाला था। फिर भी परिस्थितिवश उसे चुप रहकर प्लोंबियर्स के समझौते को स्वीकार करना पड़ा। समझौते के अनुसार सार्डिनिया को युद्ध का कारण ढूँढ़ना था।

राजकुमारी क्लोटाइल्ड की शादी जेरोम से सितंबर, 1858 में सम्पन्न हुई जिससे फ्रांस और पीडमौंट का संबंध और गहरा हुआ। जनवरी, 1859 में प्लोंबियर्स के समझौते को संधि का रूप दिया गया। रूस को 1856 ई० की पेरिस की संधि में परिवर्तन कराने के आश्वासन पर नेपोलियन तृतीय ने अपने पक्ष में कर लिया। रूसी जार 1815 ई० की वियना काँग्रेस के इटली से संबद्ध समझौते में फेरबदल पर सहमत हो गया और इस तरह ऑस्ट्रिया के विरुद्ध रूसी हस्तक्षेप की संभावना को टाल दिया गया। ब्रिटेन इटली की उदारवादी-राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रति सहानुभूति रखता था, अतः आशा की जाती थी कि वह ऑस्ट्रिया के पक्ष में इटली में हस्तक्षेप नहीं करेगा। प्रशा ऑस्ट्रिया की पराजय की कामना करता था; क्योंकि उसकी हस्तक्षेपकारी उपस्थिति के कारण ही जर्मनी का एकीकरण संभव नहीं हो पा रहा था।

ऑस्ट्रिया से युद्ध और इटली के एकीकरण का प्रथम चरण *(War with Austria and the First Stage of Italian Unification)*

कावूर ऑस्ट्रिया से युद्ध का बहाना ढूँढ़ रहा था। उधर ऑस्ट्रिया को भी सार्डिनिया एवं फ्रांस के समझौते का ज्ञान हो चुका था, जिसके कारण वह नाराज था। वह शुरू में ही सार्डिनिया को कुचल देना चाहता था, अतः 19 अप्रैल, 1859 को ऑस्ट्रिया ने पीडमौंट के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यूरोप की नजरों में ऑस्ट्रिया आक्रामक देश बन गया।

पीडमौंट से ऑस्ट्रिया की लड़ाई शुरू होने के दस दिनों के बाद फ्रांस ने दो लाख सेना के साथ ऑस्ट्रिया पर आक्रमण कर दिया ।

इस युद्ध में ऑस्ट्रिया की सेना बुरी तरह पराजित होने लगी । ऑस्ट्रिया की सेना लोम्बार्डी से खदेड़ दी गई । ऐसा प्रतीत होने लगा कि कुछ ही दिनों में इटली पर ऑस्ट्रिया के प्रभाव और आधिपत्य का अंत हो जाएगा । पूरे इटली की जनता ने अपने शासकों के विरुद्ध बगावत कर दी और राष्ट्रीय एकता की बात हर जबान पर आ गई । उधर यूरोप की कूटनीतिक स्थिति भी फ्रांस के विरुद्ध होती जा रही थी। प्रशा धमकी देने लगा कि वह ऑस्ट्रिया का पक्ष लेकर युद्ध में शामिल हो जाएगा । फ्रांस की सेनाओं को काफी हानि उठानी पड़ रही थी, जिससे फ्रांसीसियों में असंतोष फैल रहा था । नेपोलियन तृतीय कभी सोच भी नहीं पाया था कि सार्डिनिया की सेना इतनी आसानी से विजय प्राप्त कर सकेगी । वह संगठित इटली को फ्रांस के लिए खतरा मानता था, फलतः कावूर के विजयोल्लास के दौरान ही उसने ऑस्ट्रिया से संधि करने की बात सोची ।

विलाफ्रैंका और ज्यूरिख की संधि—उपर्युक्त परिस्थिति में नेपोलियन तृतीय विलाफ्रैंका (Villafranca) नामक जगह पर ऑस्ट्रिया के सम्राट फ्रांसिस जोसेफ से भेंट की और एक संधि कर ली । इस संधि के मुताबिक उसने अपनी सेना इटली से हटा ली । फ्रांसीसी सेना के युद्ध से हट जाने के बाद सार्डिनिया सैनिक रूप से कमजोर हो गया । कावूर युद्ध बंद करने के पक्ष में नहीं था; क्योंकि ऑस्ट्रिया का आधिपत्य अब भी वेनेशिया पर था । लेकिन, युद्ध चालू रखने के कावूर के प्रस्ताव को सम्राट विक्टर इमैनुएल द्वितीय ने अस्वीकार कर दिया । इसके विरोध में कावूर ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया । ज्यूरिख (Zurich) की संधि (7 नवंबर, 1859) के अनुसार लोम्बार्डी का प्रदेश पीडमौंट को प्राप्त हुआ था तथा वेनेशिया पर ऑस्ट्रिया का आधिपत्य कायम रहा । चूँकि नेपोलियन ने अंतिम समय तक ऑस्ट्रिया को इटली से बाहर निकालने में सार्डिनिया का साथ नहीं दिया था, अतः उसे सेवाय और नीस नहीं मिले ।

इटली के एकीकरण का पहला चरण नेपोलियन तृतीय की मदद से संपन्न हुआ जिसमें उसे केवल लोम्बार्डी मिला । इस प्रयास ने यह साबित कर दिया कि इटली का एकीकरण सार्डिनिया के नेतृत्व में ही हो सकता था ।

इटली के एकीकरण का द्वितीय चरण *(Second Stage of Italian Unifictaion)*

ज्यूरिख की संधि ने पीडमौंट पर कुछ दिनों के लिए सैन्य-बल के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाया था, लेकिन जन-आंदोलन पर इस संधि की शर्तें नहीं लागू हो सकीं । जिन दिनों ऑस्ट्रिया से इटली का युद्ध चल रहा था, उन्हीं दिनों मध्य इटली के परमा, मोडेना, टस्कनी और पोप के राज्यों बोलेगना और रोमेगना में जनता ने विद्रोह कर दिया जिससे वहाँ के शासकों को अपना राज्य छोड़कर भागना पड़ा । इन राज्यों में निरंकुश शासन के बदले सामयिक सरकारों का संगठन कर लिया गया था । इसी समय कावूर भी पुनः मंत्रिमंडल में शामिल हो गया । इन प्रदेशों की जनता ने सम्राट से आग्रह किया कि उनके प्रदेशों को पीडमौंट के साथ मिला दिया जाए । लेकिन, नेपोलियन तृतीय से अनुमति लिए बिना विक्टर इमैनुएल के लिए यह करना संभव नहीं था । कावूर ने नेपोलियन को सेवाय और नीस का लालच देकर जनमत-संग्रह कर उपर्युक्त राज्यों को पीडमौंट-सार्डिनिया में मिलाने के लिए राजी कर लिया । जनमत-संग्रह (plebiscite) हुआ, जिसके आधार पर 1860 ई० में परमा, मोडेना, टस्कनी, रोमेगना एवं बोलेगना पीडमौंट के साथ मिल गए । वेनेशिया को छोड़कर उत्तरी तथा मध्य इटली के डचियों के मिलने से एक शक्तिशाली इटली राज्य का निर्माण

हो गया । अप्रैल, 1860 में विक्टर इमैनुएल ने ट्यूरिन में एक नई संयुक्त इटली की पार्लियामेंट का उद्घाटन किया । इस उद्घाटन के साथ ही इटली के एकीकरण का द्वितीय चरण समाप्त हुआ ।

गैरीबाल्डी एवं इटली के एकीकरण का तृतीय चरण *(Garibaldi and Third Stage of the Unification of Italy)*

इटली के एकीकरण का तृतीय चरण गैरीबाल्डी (Guiseppe Garibaldi) के उत्साह और त्याग एवं कावूर की नीति से संभव हो सका । गैरीबाल्डी (1807–82) एक महान देशभक्त था, और उसके साथ ही एकीकरण के कार्य को उसने एक कदम आगे बढ़ाया । इटली के एकीकरण में उसने जिस महान त्याग, निःस्वार्थ भावना तथा उत्कट देशभक्ति का परिचय दिया, वैसा उदाहरण विश्व में बहुत कम मिलता है । उसी के प्रयास के परिणामस्वरूप सिसली और नेपल्स इटली के अंग बन सके ।

1807 ई० में गैरीबाल्डी का जन्म नीस में हुआ था । आरंभ में गैरीबाल्डी अपना जीवन एक नाविक के रूप में व्यतीत करना चाहता था । वह पढ़ा-लिखा नहीं था और उसका मानसिक दर्जा भी बहुत ऊँचा नहीं था । वह इटली को उतना ही प्यार करता था जितना कोई धार्मिक व्यक्ति ईश्वर से प्यार करता है । एक दिन मेजिनी से उसकी भेंट हो गई और उसकी शिक्षाओं ने उसे इतना प्रभावित किया कि वह 'युवा इटली' का सदस्य बन गया।

'युवा इटली' का सदस्य बनते ही गैरीबाल्डी ने इटली की एकता के लिए प्रयास करना प्रारंभ किया। मेजिनी के परामर्श से ही उसने पीडमौंट के नाविकों को विद्रोह के लिए उकसाया । पीडमौंट के राजा ने उसे गिरफ्तार कर लिया, लेकिन वह जेल से भागकर अमेरिका चला गया । जब फ्रांस में 1848 ई० की क्रांति हुई और मेटरनिख का पतन हुआ, तब गैरीबाल्डी स्वदेश लौट आया । उस समय पीडमौंट का ऑस्ट्रिया से युद्ध चल रहा था । गैरीबाल्डी ने स्वयंसेवकों का संगठन किया और 3,000 स्वयंसेवकों को लेकर संग्राम में चार्ल्स एल्बर्ट की खुलकर सहायता की । एल्बर्ट ने युद्ध में पराजित होकर ऑस्ट्रिया से संधि कर ली, लेकिन गैरीबाल्डी युद्ध करता रहा । उसी समय रोम में विद्रोह हो गया और मेजिनी के नेतृत्व में गणराज्य की स्थापना हुई । इस नव गणराज्य की रक्षा करने का भार गैरीबाल्डी को दिया गया। गैरीबाल्डी ने जमकर युद्ध किया । जब नगर का पतन निकट दिखाई दिया तो वह अपने सैनिकों के साथ भाग गया और वेनेशिया से ऑस्ट्रिया को भगाने का प्रयास करने लगा । लेकिन, वहाँ ऑस्ट्रिया और फ्रांस की संयुक्त सेना का सामना करना उसके लिए संभव नहीं था । अतः, उसे एड्रियाटिक के तट पर भागना पड़ा जहाँ उसने शत्रुओं का जमकर मुकाबला किया । लेकिन, इसी समय उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई जिससे वह टूट गया और अमेरिका चला गया ।

अमेरिका की इस दूसरी यात्रा में गैरीबाल्डी को काफी धन अर्जित करने का अवसर मिला। 1854 ई० में वह पुनः इटली लौट आया और पीडमौंट के नजदीक केप्रेरा (Caprera) नामक द्वीप खरीदकर खेती करने लगा । फिर भी इटली की दुर्दशा पर उसे शांति नहीं मिली और देश की स्वतंत्रता और एकता के लिए वह प्रयत्नशील रहा । 1856 ई० में गैरीबाल्डी की मुलाकात कावूर से हुई जिससे वह काफी प्रभावित हुआ । इसी समय से गणतंत्रवादी गैरीबाल्डी वैधानिक राजसत्ता में विश्वास करने लगा । इटली के इन दो महान नेताओं की यह भेंट इटली के लिए काफी लाभप्रद साबित हुई । अगर इन दोनों नेताओं का मिलन नहीं होता तो गणतंत्रवाद और राजसत्तावाद के बीच पारस्परिक गठबंधन नहीं हो पाता और इटली के एकीकरण में गैरीबाल्डी के साहस का उपयोग नहीं हो पाता ।

सिसली की विजय—गैरीबाल्डी ने कावूर से मंत्रणा कर 1860 ई० में जिनोआ से दक्षिण सिसली की ओर 1072 सैनिकों को लेकर प्रस्थान किया। ये स्वयंसेवक लाल कुरता पहना करते थे। गैरीबाल्डी ने उनकी सहायता से सिसली की राजधानी पर आक्रमण कर दिया और विजयी हुआ। 5 अगस्त, 1860 को उसने विक्टर इमैनुएल द्वितीय के नाम पर अपने को सिसली का अधिनायक घोषित कर दिया। इसके बाद उसने नेपल्स पर आक्रमण किया जहाँ का राजा भाग खड़ा हुआ और नेपल्स भी गैरीबाल्डी के कब्जे में आ गया।

अब गैरीबाल्डी रोम पर आक्रमण करने की योजना बनाने लगा। रोम में पोप की रक्षा के लिए फ्रांसीसी सेना मौजूद थी और फ्रांसीसी जनता भी पोप की बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। इसके अलावा कावूर को गैरीबाल्डी की बढ़ती लोकप्रियता और उसके पुराने गणतंत्रवादी विचार से भी भय था कि कहीं गैरीबाल्डी अपने को उन मुक्त इलाकों का शासक न घोषित कर दे। ऐसी परिस्थिति में फ्रांस की सेना को हस्तक्षेप करने का मौका प्रदान करने के बजाय कावूर ने स्वयं हस्तक्षेप कर गैरीबाल्डी को रोकना उचित समझा। उसने नेपोलियन तृतीय को विश्वास में लेकर विक्टर इमैनुएल द्वितीय को एक सेना के साथ रोम की ओर भेजा, जहाँ उसने पोप के राज्य पर आक्रमण कर कब्जा कर लिया। इसके बाद वह आगे बढ़ा, जहाँ गैरीबाल्डी से उसकी भेंट हो गई। गैरीबाल्डी ने भक्ति-भाव से अपने सारे जीते हुए इलाकों को विक्टर इमैनुएल को सौंप दिया। उसने इटली के एकीकरण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाकर दक्षिणी इटली को जीतकर इटली के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

1861 ई० तक इटली के पक्ष में विक्टर इमैनुएल द्वितीय ने कापुआ और गेटा को भी जीत लिया। रोम तथा वेनेशिया को छोड़कर संपूर्ण इटली के प्रदेशों पर विक्टर का अधिकार हो चुका था। 18 फरवरी, 1861 के दिन तूरिन में एक नई संसद का उद्घाटन हुआ और 1 मार्च को पीडमौंट-सार्डिनिया का नाम बदलकर इटली का राज्य कर दिया गया। विक्टर इमैनुएल द्वितीय 'ईश्वर की अनुकंपा और राष्ट्र की इच्छा से इटली का राजा' घोषित किया गया। इस अवसर पर गैरीबाल्डी भी उपस्थित था। उसने जनता से आग्रह किया कि इटलीवासी विक्टर के प्रति अपनी श्रद्धा एवं भक्ति दिखाएँ और इस तरह इटली के एकीकरण का तृतीय चरण पूरा हुआ।

गैरीबाल्डी एक महान योद्धा एवं देशभक्त था। यह सच है कि सिसली और नेपल्स को कोई गैरीबाल्डी ही जीत सकता था; क्योंकि इस समय कोई विदेशी सहायता मिलने की संभावना नहीं थी। गैरीबाल्डी के सैनिक राष्ट्रीय जीवन जीने के लिए उतावले थे और उसके लिए कोई भी कुर्बानी देने को तैयार थे। जब गैरीबाल्डी को राजा ने पुरस्कृत करना चाहा तो गैरीबाल्डी ने कहा कि देशसेवा अपने में स्वयं एक पुरस्कार है और उसने अपने लिए थोड़ा-सा बीज माँगा जो उसके द्वीप केप्रेरा में कृषि के लिए आवश्यक था। राष्ट्र के प्रति इस तरह की देशभक्ति और त्याग का उदाहरण विश्व में बहुत कम मिलता है।

कावूर की मृत्यु—कावूर के नेतृत्व में इटली ने तीन बार एकीकरण का सफल प्रयास कर अपने को संगठित कर लिया। लेकिन, अब भी वेनेशिया और रोम इटली में सम्मिलित नहीं हुए थे। कावूर समय के साथ-साथ इटली में इन इलाकों को भी सम्मिलित करने की योजना बना रहा था, लेकिन संयोगवश 6 जून, 1861 ई० को 51 वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई। इटली के एकीकरण में मेजिनी, गैरीबाल्डी, विक्टर इमैनुएल द्वितीय, असंख्य देशभक्तों, फ्रांसीसी मदद एवं कावूर का योगदान रहा। लेकिन, यदि कावूर नहीं होता तो बाकी सारे लोग एवं परिस्थितियाँ इटली का एकीकरण नहीं कर पातीं। मेजिनी का आदर्शवाद और गैरीबाल्डी के युद्ध-कौशल का प्रयोग कावूर की चतुरता से ही संभव हो

सका, नहीं तो ऑस्ट्रिया और फ्रांस की सेना के सामने उनकी एक भी न चलती । फ्रांसीसी मदद लेना भी कावूर की राजनीतिक सूझ-बूझ का ही परिणाम था । इसलिए केटेलबी द्वारा कावूर की तारीफ यथायोग्य है । ब्रिटिश संसद में कावूर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए **लॉर्ड पामर्स्टन** ने कहा था, "एक राष्ट्र के रूप में इटली कावूर की देन है ।··· एक मृतप्राय राष्ट्र को उसने नया जीवन प्रदान करके ओजस्वी बना दिया ।"

इटली के एकीकरण का चतुर्थ चरण *(Fourth Stage of the Unification of Italy)*

वेनेशिया और रोम पर अभी भी क्रमशः ऑस्ट्रिया और पोप का शासन था । विक्टर इमैनुएल इन दोनों इलाकों को इटली में मिलाने की ताक में था । जर्मनी के एकीकरण के दौरान प्रशा और ऑस्ट्रिया की लड़ाई अवश्यंभावी हो गई । प्रशा लड़ाई के लिए कूटनीतिक तैयारी करने लगा । प्रशा के चांसलर बिस्मार्क ने इटली से भी संपर्क स्थापित किया और तय किया कि प्रशा और ऑस्ट्रिया की लड़ाई के समय इटली वेनेशिया पर आक्रमण कर दे । बिस्मार्क ने आश्वासन दिया कि प्रशा ऑस्ट्रिया से तभी संधि करेगा, जब वह वेनशिया को इटली को सौंपने के लिए राजी हो जाएगा । 1866 ई० में प्रशा और ऑस्ट्रिया में युद्ध शुरू हुआ । इटली ने वेनेशिया पर आक्रमण कर दिया । युद्ध में ऑस्ट्रिया पराजित हुआ और संधि के समय बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया को बाध्य किया कि वह वेनेशिया इटली को दे दे । इस तरह 1866 ई० में वेनेशिया इटली का अंग बन गया और इटली के एकीकरण का चतुर्थ चरण समाप्त हुआ ।

इटली के एकीकरण का अंतिम चरण *(Last Stage of the Unification of Italy)*

रोम अब भी संयुक्त इटली का अंग न होकर पोप के अधीन था । सम्राट नेपोलियन तृतीय और विक्टर इमैनुएल द्वितीय में एक समझौता हुआ था जिसके अनुसार इटली के राजा ने पोप के राज्य पर आक्रमण नहीं करने का वचन दिया था । फ्रांस की एक सेना पोप के राज्य के रक्षार्थ रोम में रहा करती थी। ऐसी स्थिति में रोम पर आक्रमण करने का अर्थ था फ्रांस से युद्ध, जिसके लिए इटली तैयार नहीं था।

रोम पर इटली को अधिकार जमाने का सुअवसर 1870 ई० में प्राप्त हुआ । प्रशा ने जर्मनी के एकीकरण के लिए अंतिम लड़ाई फ्रांस से 1870 ई० में लड़ी । इस लड़ाई के लिए प्रशा के चांसलर, बिस्मार्क, ने कूटनीतिक तैयारी करते समय विक्टर इमैनुएल द्वितीय को बताया कि युद्ध के दौरान फ्रांस अपनी सेना रोम से हटाएगा । जैसे ही फ्रांसीसी सेना हटे वैसे ही इटली को रोम पर आक्रमण कर अपने अधीन कर लेना था । 1870 ई० में प्रशा और फ्रांस में युद्ध शुरू हुआ और फ्रांस को अपनी सेना रोम से हटानी पड़ी । स्थिति का लाभ उठाकर 1870 ई० में विक्टर इमैनुएल ने रोम पर आक्रमण कर उसे अपने कब्जे में कर लिया । जनता की इच्छा जानने के लिए जनमत-संग्रह किया गया, जिसमें पोप को मात्र 46 मत प्राप्त हुए । अतः, रोम इटली में शामिल हो गया । 1871 ई० में रोम संयुक्त इटली की राजधानी बना । 2 जून, 1871 को विक्टर इमैनुएल द्वितीय अपने परिवार, राजदरबार और संसद के साथ रोम चला आया । जनता को संबोधित करते हुए उसने कहा, "हम रोम में आ गए हैं और अब यहीं रहेंगे ।" इटली के एकीकरण का पंचम और अंतिम चरण अब पूरा हुआ और इस प्रकार विश्व के मानचित्र पर संयुक्त इटली का उद्भव हुआ ।

□